लट्ठमार होली

भाग 1

अवधि : 03.01

शब्द : 462

	वक्ता	
00.17	डा. उमेश चंद्र शर्मा, भाषाविद	समूचा बृज होली के रंग में रंगा रहता है। नंद गांव के आस-पास के गांव अष्ट गांव के गांव हैं और बरसाने के आस-पास के गांव राधा रानी की अष्ट सखियों के गांव हैं। वो गांव के जूत के जूत, युवितयों के और युवाओं के एकत्रित हो जाते हैं और अपने पूरा श्रृंगार, होलिका का और ढाल, जो लट्ठ पडते हैं तो वो ढालों से वो अपनी रक्षा करते हैं। तो ये ढाल और ये लट्ठ ये सब कुछ लेकर वो वहां से चलते हैं और पीली पोखर पर ये सारे के सारे आकर के ये एकत्रित हो जाते हैं जहां इनका स्वागत सत्कार किया जाता है।
01.06	माधव गोस्वामी	राधा रानी के यहां जो हम होली खेलने के लिये आये हैं श्री राम बरसाना में, ये समस्त बृज वासी सज धज कर आये हैं। ये यहां पर हमारा परम्परागत, जो सुहार चला आ रहा है, उसके लिये हम लोग यहां पर पधारे हैं

		लट्ठा मार होली के लिये।
01.20	सामुहिक स्वर	आज बिरज में होली रे रसिया आज बिरज में होली रे रसिया
01.31	डा. उमेश चंद्र शर्मा, भाषाविद	तो ग्वारिया की स्थित क्या होती है, केवल वो जो है अपने आप में मगन रहता है। ‘ ग्वारिया गंवारिया, गुर ते रोटी खाये, पोखरा को पानी पीवे गद्द पेट भर जाये।‘ - ये ग्वारिया के बारे में कहा जाता है।
01.31	सामुहिक स्वर	आज बिरज में होरी रे रसिया
01.31	डा. उमेश चंद्र शर्मा, भाषाविद	पगडी यहां की पोशाक है। लेकिन वो पगडी सफेद रंग की नहीं होती है, पीले रंग की होती है। या अन्य रंग बिरंगे रंगों की, लाल, पीले, सफेद मिला करके, इस तरीके से भांति भांति की होती है। लगभग एक जैसी होती है।
01.31	हेमंत गोस्वामी	लाठी की चोट पडती है उससे बचने के लिये होती है ये। उसके नीचे एक छोटा सा, हम कम्बल सा लगाते हैं या कुछ भी, टॉवल ले लो, वो लगाते हैं। फिर उसके उपर ये पगडी बांधते हैं हम लोग।

02.12	माधव गोस्वामी	ये हमारी जो पगडी है ये पांच मीटर लम्बी होती है। इसको हम हाथों से घुमा घुमा के बांधते हैं और ये हमारा आज का श्रृंगार है। ये हमारा एक आज का अद्भुत श्रृंगार है जिसको हम साल में एक ही दिन, आज ही के दिन इसका धारण करते हैं और ये पगडी लट्ठा मार होली का श्रृंगार मानी जाती है।
01.31	माधव गोस्वामी एवं अन्य स्वर	बन आयो रसिया, होली ओढन आयो, मन का श्रृंगार बनायो और बीच में व्रंदा रोरी को लाला बीच में व्रंदा रोरी को बन आयो रे, बन आयो रे, रसिया होरी को बन आयो रे
01.31	माधव गोस्वामी एवं अन्य स्वर	बोल बृजभान के जंवाई की
01.31	माधव गोस्वामी एवं अन्य स्वर	जय